प्राक्कथन

क्रूस और कलीसिया

''अपनी और पूरे झुंड की चौकसी करो; जिस में पवित्र आत्मा ने तुझ़्हें अध्यक्ष ठहराया है; कि तुम परमेश्वर की कलीसिया की रखवाली करो, जिसे उसने अपने लोहू से मोल लिया है'' (प्रेरितों 20:28)।

नए नियम के इस विचार से कि मसीह ने हमारे पापों का दाम चुका दिया है, को जानने वाले मानेंगे कि ''क्रूस के बिना मसीह पापियों को बचाने के लिए वैसे ही शज़्तिहीन होगा जैसे क्रूस मसीह के बिना हो।'' परन्तु सुसमाचार की अच्छी बात यह है कि परमेश्वर के अभिषिज़्त अर्थात परमेश्वरत्व के दूसरे सदस्य ने हमारे पापों के लिए क्रूस पर अपनी शारीरिक देह को दे दी (1 कुरिन्थियों 15:3)। मसीह क्रूसरहित नहीं था, और न क्रूस मसीह रहित, जिस कारण मनुष्य अर्थात पापी आशारहित नहीं हैं।

बाइबल की कहानी का सार मनुष्य के लिए परमेश्वर के पुत्र द्वारा क्रूस पर दिया गया अपना बलिदान है। नये नियम के पृष्ठ शाही लहू से सने पड़े हैं। पुराने नियम के पृष्ठ इसकी भविष्यवाणियों से और नए नियम के पृष्ठ इसकी ऐतिहासिक वास्तविकता के साथ, मसीह के लहू से भरे हुए हैं। हैनरी सी. थियसन ने गणना की कि सुसमाचार की चारों पुस्तकों के लगभग पांचवें भाग में यीशु के जीवन के अन्तिम तीन दिनों का वर्णन ही है। उसने लिखा कि यदि यीशु की सार्वजनिक सेवकाई के साढ़े तीन वर्षों के बारे में उसकी मृत्यु की तरह ही विस्तारपूर्वक लिखा जाता तो सुसमाचार की पुस्तक पृष्ठ 8,400 हो सकते थे।[1] आर. ए. टोरे का अनुमान है कि नए नियम के 53 में से 1 पद में मसीह की मृत्यु का विशेष उल्लेख किया गया है।[2]

क्रूस उस सबके लिए जो संसार में नहीं है जमा या जोड़ का निशान है। क्रूस को निकाल देने पर, बाइबल घने जगल में लकड़ी के एक बड़े खोल की तरह रह जाएगी। संसार में मसीहियत ही एकमात्र ऐसा धर्म है जिसका मुज़्य आकर्षण पाप के लिए आत्मिक बलिदान और उस बलिदान का मरे हुओं में से जी उठना है।

पाप और पापियों, अपराध और दुष्टता, तलाक और ज़्लेश के इस संसार में, उद्धार के लिए

क्रूस *परमेश्वर की सामर्थ* है अर्थात संसार की मूल समस्या का यह ईश्वरीय समाधान है। लिखा है: ''क्रूस की कथा नाश होने वालों के निकट मूर्खता है, परन्तु हम उद्धार पाने वालों के निकट परमेश्वर की सामर्थ है'' (1 कुरिन्थियों 1:18); ''और वही हमारे पापों का प्रायश्चित है; और केवल हमारे ही नहीं, वरन सारे जगत के पापों का भी'' (1 यूहन्ना 2:2)।

झनझनाते हुए आत्मिक झगड़े, अर्थात परमेश्वर से दूरी और उसके साथ अनबन के बीच पड़कर *मेल तथा शांति के लिए क्रूस परमेश्वर का हथियार है।* पौलुस लिखता है कि, परमेश्वर ने ''उसके क्रूस पर बहे हुए लोहू के द्वारा अपने साथ मेल ...'' किया (कुलुस्सियों 1:20)। इफिसियों 2:14-16 कहता है, ''ज़्योंकि वही हमारा मेल है, जिसने दोनों को एक कर लिया और अलग करने वाली दीवार को जो बीच में थी, ढाह दिया ... कि दोनों से अपने में एक नया मनुष्य उत्पन्न करके मेल करा दे। और क्रूस पर बैर को नाश करके इसके द्वारा दोनों को एक देह बनाकर परमेश्वर से मिलाए।''

जहां आत्मिक भूख और निर्धनता ज़्यादा होगी, वहीं *परमेश्वर भरपूरी से छुटकारा भी भेजता* है। क्रूस के चरणों में धार्मिकता का ख़ज़ाना मुफ़्त बांटा जाता है। पौलुस ने कहा, ''परन्तु हम तो उस क्रूस पर चढ़ाए हुए मसीह का प्रचार करते हैं ...'' उसने आगे कहा कि क्रूस पर चढ़ाया गया मसीह ही, ''परमेश्वर की ओर से हमारे लिए ज्ञान अर्थात धर्म, और पवित्रता, और छुटकारा'' ठहराता है (1 कुरिन्थियों 1:23, 30)।

नि:संदेह, पवित्र आत्मा मसीह के क्रूस को मध्यसज्जा की तरह में बाइबल का केन्द्रीय सन्देश ठहराकर, अपने प्रकाश से चमकाता है।

छुटकारे की अन्य सभी सच्चाइयों के साथ जोड़ने के कारण क्रूस को उम्मीद होनी थी कि सूर्य में से रोग दूर करने वाली किरणों की तरह कलीसिया क्रूस रूपी झरने में से धारा बनकर निकले। नए नियम को ध्यान से पढ़ने पर यह पुष्टि हो जाती है कि बात कुछ ऐसी ही है। जैसे बिना सिर के कोई धड़ जीवित नहीं रह सकता वैसे ही न तो मसीह रहित मसीहियत और न मसीहियत बिना कलीसिया के हो सकती है। नए नियम के संदेश की एक महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि क्रूस और कलीसिया आपस में गुंथे हुए हैं अर्थात एक योजना के रूप में जुड़े हुए हैं, जिससे नाश हो रही मनुष्यजाति को परमेश्वर के अनुग्रह का दान दिया जाए। परमेश्वर मसीह में एक देह बनाने के लिए पृथ्वी के सब लोगों में से, क्रूस के द्वारा अपने चुने हुए लोगों का एक परिवार बनाता है।

इस विचार को और विस्तार देते हैं: कलीसिया क्रूस से कैसे जुड़ी हुई है? क्रूस और कलीसिया का एक दूसरे से ज़्या सज्बन्ध है? क्रूस कलीसिया के लिए ज़्या करता है?

इसके द्वारा सृजी गई

पहले तो, क्रूस से कलीसिया का सृजन होता है। पापियों के छुटकारे के द्वारा कलीसिया उपजती है। क्रूस न होता तो कलीसिया भी नहीं होनी थी।

जब कोई व्यज़्ति आज्ञाकारी विश्वास के साथ मसीह को उद्धारकर्ज़ा और परमेश्वर का पुत्र मानता है तो उसके पाप मसीह के लहू में धोए जाते हैं (प्रेरितों 22:16)। पाप धोए जाने

के साथ ही वह छुटकारा पाये हुए लोगों के समूह अर्थात उद्धार पाए हुओं के इस नए समाज में मिल जाता है जिसे नये नियम में ''कलीसिया'' कहा गया है। इसी कारण, पौलुस ने ''कलीसिया'' को यीशु के लहू से खरीदे हुए लोग कहा। इफिसुस के प्राचीनों से उसने कहा कि ''अपनी और पूरे झुण्ड की चौकसी करो जिसमें पवित्र आत्मा ने तुम्हें अध्यक्ष ठहराया है कि तुम परमेश्वर की कलीसिया की रखवाली करो, जिसे उसने अपने ही लोहू से मोल लिया है'' (प्रेरितों 20:28)। स्पष्टतया प्रभु यीशु कलीसिया के लिए ही क्रूस पर मरा। पौलुस ने कहा, ''मसीह ने भी कलीसिया से प्रेम करके अपने आप को उसके लिए दे दिया'' (इफिसियों 5:25ख)। यीशु की मृत्यु का उद्देश्य ''बुलाए हुए'' लोग उपलब्ध कराना था जो इस संसार में मसीह की संगति में रहें और उसके आत्मिक कार्य के लिए समर्पित हों। पौलुस ने तीतुस को बताया कि यीशु ''ने अपने आप को हमारे लिए दे दिया कि हमें हर प्रकार के अधर्म से छुड़ा ले, और शुद्ध करके अपने लिए ऐसे लोग बना ले जो भले-भले कामों में सरगर्म हों'' (तीतुस 2:14)।

दक्षिणी आरकेन्सा में एक सुसमाचार सभा में मेरे संदेश के बाद, एक महिला ने मुझे एक असाधारण और मार्मिक कहानी सुनाई। उसने डैलस, टैक्सस में रहते समय अपने साथ बीती एक ऐसी घटना बताई जो उस समय घटी थी जब वह चार वर्ष की थी। उस समय उसका परिवार व्यस्त राजमार्ग के निकट रहता था, जहां उनके आंगन में बच्चों के खेलने के लिए थोड़ी सी जगह थी। शाम के समय, एक दिन वह और पड़ोस के कई बच्चे आंगन में बॉल खेल रहे थे कि बॉल उसके सिर के ऊपर से होती हुई राजमार्ग की तरफ चली गई। बिना इधर-उधर देखे, वह उस बॉल को लेने के लिए भागी। बॉल को उठाने के लिए झुकते ही, राजमार्ग पर एक बड़े ट्रक को अपनी ओर आते देखकर वह भय से बेजान सी हो गई। उसके भाई ने, जो उस समय नौ वर्ष का था, उसे राजमार्ग की ओर भागते और ट्रक को आते देख लिया था। उसे बचाने के लिए वह तेजी से उसकी ओर भागा। बड़ी मुश्किल से उसने अपनी जान पर खेलकर ट्रक के आगे से अपनी बहन को परे धकेलकर मौत के मुंह से बचा लिया। लड़के के पास अपनी बहन को बचाने के लिए पलभर का समय काफी था, लेकिन इतना समय नहीं था कि वह अपने आप को भी बचा पाता। ट्रक उसे कुचलता हुआ निकल गया और घटनास्थल पर ही उसकी मृत्यु हो गई।

उस स्त्री ने बताया कि उसे यह दु:खद घटना पूरी तो याद नहीं है, लेकिन इतना अवश्य याद है कि उसके भाई के शव को एक एम्बुलैंस में डालकर ले जाने तक सड़क से उठाकर घर की ड्योढ़ी में रखा गया था। फिर उसने लम्बी सांस लेकर अपने भाई का धन्यवाद करते हुए बड़ी ही महत्वपूर्ण बात कही, ''मेरे भाई ने मेरे लिए अपनी जान दे दी।'' वह महिला एक मसीही विश्वासिन है, परन्तु आज उसे यह जीवन और कलीसिया में आने का सौभाग्य इसलिए मिला क्योंकि कई वर्ष पहले उसे बचाने के लिए उसके भाई ने खुद को बलिदान कर दिया था।

बिल्कुल इसी ढंग से, परन्तु और भी अधिक गहरे अर्थ में, कलीसिया को जीवन यीशु के बलिदान के कारण ही मिला है। उसके बलिदान से न केवल हमें जीवन में प्रवेश का अवसर मिला है, बल्कि उससे हमें निरन्तर जीवन मिलता रहता है; उसकी मृत्यु प्रायश्चित

का हमारा बलिदान अर्थात हमारे पिछले पापों की क्षमा का माध्यम है। यीशु इस संसार में आया, परमेश्वर-मनुष्य के रूप में हमारे मध्य विचरा और अपनी मृत्यु से उसने अपने लिए ''परमेश्वर की निज प्रजा'' को मोल ले लिया (1 पतरस 2:9)। कलीसिया या चर्च ईंटों और सीमेंट की बनी इमारत नहीं बल्कि उसके लहू से खरीदे गए लोग हैं।

मसीह के बलिदान को हम तीन प्रकार से मान सकते हैं। पहला, मसीह ने जो कुछ हमारे लिए किया उसके लिए उसका *आभार* जताकर हम क्रूस को स्वीकार करते हैं। धन्यवाद हो परमेश्वर का कि छुटकारा पाए हुए लोग मसीह के अनुग्रह के दान से आनन्दित होते हैं! मसीह के पास स्वर्गीय महिमा के भरपूर भण्डार थे; परन्तु फिर भी हमारे लिए स्वर्ग को छोड़ कर और मनुष्य बनकर वह निर्धन बना, ताकि उसके निर्धन बनने से हम आत्मिक धनी बन सकें (2 कुरिन्थियों 8:9)। फिर, हमारे लिए उसकी मृत्यु का लाभ लेने के लिए उसे सच्चे मन से प्रभु मान लेना आवश्यक है। मसीह में विश्वास और आज्ञापालन से ही, हमें अपने जीवनों में उसकी मृत्यु का लाभ मिलता है (रोमियों 6:1-4)। वह सब के लिए मरा (इब्रानियों 2:9), किन्तु उसकी मृत्यु का लाभ केवल उसकी आज्ञा को मानने वाले ही उठाते हैं (इब्रानियों 5:8, 9)। तीसरा, मन से सेवा करके हमें उसके बलिदान को स्वीकार करना चाहिए (1 कुरिन्थियों 15:58)। सिर से पांव तक अर्थात हमारी देह, प्राण और आत्मा, पूरी तरह से मसीह के हैं (1 कुरिन्थियों 6:19, 20)। इसी कारण, इस संसार में हमारा काम उसकी सेवा, उसकी इच्छा और निर्देश से उसके आनन्द को पूरा करना है।

इसके द्वारा शुद्ध हुई

दूसरा, क्रूस कलीसिया को निरन्तर शुद्ध करता है। शुद्ध करने की इसकी शक्ति परमेश्वर के लोगों में और उनके द्वारा प्रतिदिन वैसे ही बहती है जैसे हमारी शारीरिक देह में लहू संचार करके हमें बल देता और शुद्ध करता है। यीशु का बहुमूल्य लहू अपने लोगों में बहता है और उन्हें जीने की शक्ति देता है।

हमारे लिए *उद्धार* पाना ही नहीं बल्कि *पाए हुए रहना* भी आवश्यक है। जब भी किसी पापी को मसीह के सुसमाचार को मानने पर उसके लहू में धोया जाता है और परमेश्वर के अनुग्रह से वह मसीह में आता है तो कलीसिया में बढ़ौतरी होती है। जब एक मसीही ज्योति में चलता है तो उसे प्रतिदिन मसीह के लहू से धोया जाता है। यूहन्ना ने लिखा, ''पर यदि जैसे वह ज्योति में है, वैसे ही हम भी ज्योति में चलें, तो एक दूसरे से सहभागिता रखते हैं, और उसके पुत्र यीशु का लोहू हमें सब पापों से शुद्ध करता है'' (1 यूहन्ना 1:7)। यूहन्ना द्वारा इस्तेमाल किए गए शब्द ''शुद्ध करता है'' यूनानी भाषा में वर्तमान क्रियाशील काल है जो इस बात का संकेत है कि वह निरन्तर अर्थात वर्तमान में इस समय भी धो रहा है।

मसीही आदमी सिद्ध नहीं है, यद्यपि पाप से दूर रहकर वह प्रतिदिन मसीह में बढ़ना चाहता है। *वह दोषरहित नहीं है, परन्तु वह निष्कलंक होना चाहिए।* पापी के जीवन में पाप की उपस्थिति ही मसीह के लहू के द्वारा उद्धार को आवश्यक बनाती है, और एक Saint या पवित्र जन के जीवन में पाप का अर्थ है कि उसे भी मसीह के लहू के द्वारा उद्धार की

आवश्यकता है। इस संसार में हमारी सबसे बड़ी आवश्यकता पापों की क्षमा ही है।

अपने बच्चों को साइकिल चलाना सीखते देखना अच्छा लगता था। इस नई कला को सीखने के लिए उन्हें मुख्य रूप से दो कठिनाइयां आती थीं: साइकिल पर बैठना और फिर उसे खड़ा रखना। उद्धार पाने के लिए भी साइकिल सीखने की तरह ही दो बातें हो सकती हैं: पापी के लिए पहले तो आवश्यक है कि वह परमेश्वर के साथ सीधा हो, और फिर उसके बाद सीधा खड़ा भी रहे। सीधा होना आवश्यक है, परन्तु यह तो एक शुरुआत ही है। जिस बात से वह पहले पापी बना था–अर्थात जो उसके जीवन में पाप का धब्बा था–उसी बात में वह मसीही बनने के बाद भी पापी ठहर सकता है यदि उसे लगातार शुद्ध नहीं किया जाता (प्रेरितों के काम 8:22)। यदि उसके लिए मसीही बनने से पहले किए गए पापों से उद्धार आवश्यक था, तो क्या मसीही बनने के बाद किए गए पापों से उद्धार की आवश्यकता नहीं होगी?

यदि क्रूस न होता, तो कलीसिया भी नहीं होती।

एक मसीही व्यक्ति उद्धार पाया हुआ तभी रह सकता है यदि वह ''ज्योति में चलता है।'' प्रेरित यूहन्ना के अनुसार ज्योति में चलने के लिए दो आत्मिक गुण होने आवश्यक हैं। *इसका आरम्भ उद्धार के लिए यीशु पर भरोसा* रखने से होता है: ''और वही हमारे पापों का प्रायश्चित है; और केवल हमारे ही नहीं, वरन सारे जगत के पापों का भी'' (1 यूहन्ना 2:2)। स्पष्ट है कि, हम उद्धार कमा नहीं सकते (इफिसियों 2:8, 9)। यीशु ने कहा कि विश्वास और आज्ञा मानकर उसे ग्रहण करने पर, वह हमारा उद्धार करेगा। जो कुछ उसने करने के लिए कहा है, हमारे लिए वैसा ही करना आवश्यक है। हम विश्वास से चलते हैं, न कि देखने से (2 कुरिन्थियों 5:7)।

ज्योति में चलने के लिए *ईमानदारी से उसकी इच्छा को पूरा करना* भी आवश्यक है। यूहन्ना ने लिखा है ''और परमेश्वर का प्रेम यह है, कि हम उसकी आज्ञाओं को मानें ...'' (1 यूहन्ना 5:3); ''जो कोई यह कहता है कि मैं उसे जान गया हूं और उसकी आज्ञाओं को नहीं मानता, वह झूठा है, और उसमें सत्य नहीं; पर जो कोई उसके वचन पर चले, उसमें सचमुच परमेश्वर का प्रेम सिद्ध हुआ है'' (1 यूहन्ना 2:4, 5)। ज्योति में चलने का अर्थ अपने पापों को मान लेना (1 यूहन्ना 1:8, 10), परमेश्वर के सामने अपने पापों को स्वीकार करना (1 यूहन्ना 1:9), और अपनी क्षमता से अपने पापों को सुधारना है (1 यूहन्ना 2:29)। इसका अर्थ यह है कि वैसे चलना जैसे वह चलता था (1 यूहन्ना 2:6) और गम्भीरतापूर्वक परमेश्वर के आत्मा की प्रेरणा से दिए गए प्रकाशन अर्थात बाइबल को मानना (2 तीमुथियुस 3:16)।

इसके द्वारा विवश की गई

तीसरा, क्रूस कलीसिया को प्रेरणा देता है और गतिशील बनाता है। यह कलीसिया के

मन में आत्मिक प्रेरणा देता है कि हम वैसे लोग बनें जैसे मसीह हमें बनाना चाहता है और वह काम करें जो वह चाहता है कि हम करें।

मसीही लोगों को निजी सामर्थ के साथ-साथ निरन्तर शुद्धि की भी आवश्यकता है। मसीहियत से भलाई की बहुत सी प्रेरणा मिलती है; परमेश्वर का अनुग्रह सबसे बढ़कर और सदा तक रहने वाला है। क्रूस लोगों के जीवनों को संचालित करता है। यीशु ने कहा, ''और मैं, यदि पृथ्वी पर से ऊंचे पर चढ़ाया जाऊंगा, तो सबको अपने पास खींचूंगा'' (यूहन्ना 12:32)। पौलुस ने लिखा, ''ज़्योंकि मसीह का प्रेम हमें विवश कर देता है, इसलिए कि हम यह समझते हैं, कि जब एक सब के लिए मरा तो सब मर गए; और वह इस निमिज़ सब के लिए मरा कि जो जीवित हैं, वे आगे को अपने लिए न जीएं परन्तु उसके लिए जो उनके लिए मरा और फिर जी उठा'' (2 कुरिन्थियों 5:14, 15)।

क्रूस मसीही लोगों में परमेश्वर और एक दूसरे के प्रति प्रेम की भावना *भरता* है। यूहन्ना ने लिखा है, ''हम इसलिए प्रेम करते हैं कि, पहले उसने हम से प्रेम किया'' (1 यूहन्ना 4:19)। मसीही लोग जब प्रतिदिन उसके लोगों के लिए उसके प्रेम का मनन करते हैं, तो वे और गहराई से उसके प्रेम की ओर खिंचे जाते हैं। यूहन्ना ने आगे कहा, ''हम ने प्रेम इसी से जाना, कि उसने हमारे लिए अपने प्राण दे दिये; और हमें भी भाइयों के लिए प्राण देना चाहिए'' (1 यूहन्ना 3:16)। यीशु के जीवन की कोई भी समीक्षा हमारे लिए उसके प्रेम की गहराई और स्थिरता के नए और भावोज़ेजक चित्र बनाती है। इन चित्रों पर विचार मसीही लोगों को यीशु और एक दूसरे के प्रति एकसमान प्रेम देता है: ''परन्तु जब हम सब के उघाड़े चेहरे से प्रभु का प्रताप इस प्रकार प्रकट होता है, जिस प्रकार दर्पण में, तो प्रभु के द्वारा जो आत्मा है, हम उसी तेजस्वी रूप में अंश-अंश करके बदलते जाते हैं'' (2 कुरिन्थियों 3:18)।

क्रूस मसीही लोगों में पाप के प्रति घृणा और नफ़रत *भरता* है। कलवरी का क्रूस और अनन्त विनाश का अगाध गड्ढा बुराई और पाप के सर्वनाश के दो जबर्दस्त गवाह हैं। क्रूस के कारण और नरक की आवश्यकता को समझाने वाला व्यज़्ति यह बहस नहीं करता कि पाप करने में कोई भलाई है। परमेश्वर की सन्तान यह नहीं भूल सकती कि यरूशलेम के बाहर क्रूस पर परमेश्वर के पुत्र की दर्दनाक मौत के द्वारा उसका छुटकारा मिला है। सर्वशज़्तिमान परमेश्वर पाप का प्रायश्चित (दाम) केवल अपने पुत्र के बलिदान से ही उपलज़्ध करवा सकता था। महंगे सौदे की यह घटना हर समझदार व्यज़्ति को पाप छोड़ने और उससे दूर रहने के लिए विवश कर देगी।

क्रूस, हमें *विवश* करता है कि हम मसीह के उद्देश्य के लिए अपने आप को पूरी तरह से दे दें। इससे मसीही लोगों को परमेश्वर की सेवा और अन्य लोगों की सहायता के लिए और सामर्थ मिलती है। पौलुस ने लिखा, ''मैं यूनानियों और अन्यभाषियों का और बुद्धिमानों और निर्बुद्धियों का कर्ज़दार हूं'' (रोमियों 1:14)। उसने आगे लिखा, ''परन्तु मैं जो कुछ भी हूं, परमेश्वर के अनुग्रह से हूं, और उसका अनुग्रह जो मुझ पर हुआ, वह व्यर्थ नहीं हुआ; परन्तु मैंने उन सब से बढ़कर परिश्रम भी किया, तो भी यह मेरी ओर से नहीं हुआ परन्तु

परमेश्वर के अनुग्रह से जो मुझ पर था'' (1 कुरिन्थियों 15:10)। मसीह का कार्य करने के लिए किसी भी मसीही को उससे बढ़कर प्रेरणा नहीं मिल सकती जो यह समझकर उसका आभार मानता है कि परमेश्वर ने क्रूस पर उसके लिए ज़्या किया है।

एक पुरानी कहानी है जिसमें एक स्त्री का किसी निर्दयी व्यज़्ति से विवाह हो जाता है। विवाह के प्रति अपने समर्पण के कारण, वह स्त्री एक लापरवाह जीवन साथी के साथ रहने के बावजूद अच्छी पत्नी बनने को दृढ़ संकल्प थी। वह उसके लिए खाना बनाती, उसके कपड़े धोती और उसके घर की देखभाल करती। एक अच्छी पत्नी से जो भी अपेक्षा की जा सकती है वह ऐसा सब कुछ करती थी, परन्तु उसे इसमें कोई आनन्द नहीं मिलता था। उसका जीवन चज़्की की तरह था जिसमें कोई आनन्द नहीं था। एक दिन उसके पति की मृत्यु हो गई, और कुछ समय बाद उसने दूसरा विवाह कर लिया। दूसरे पति का स्वभाव पहले पति के स्वभाव के बिल्कुल विपरीत था। यह आदमी प्रेम करने वाला, सराहना करने वाला तथा प्रोत्साहन देने वाला था। यह स्त्री इसकी पत्नी का दायित्व भी वैसे ही निभाती थी जैसे पहले पति के साथ, परन्तु अन्तर केवल यही था कि अब वह संतुष्ट थी! पहले पति के साथ, वह अच्छी पत्नी होने का *फर्ज़ पूरा करती* थी, परन्तु दूसरे विवाह में वह *आनन्द से* अच्छी पत्नी थी। सचमुच, प्रेम से कितना फ़र्क पड़ जाता है!

मसीह की कलीसिया बड़ी सावधानी से अपने प्रभु की आज्ञाओं को मानती है। वह उसकी इच्छा और उसकी योजनाओं को पूरा करती है, उसके प्रेम तथा अनुग्रह की अन्दरूनी प्रेरणा के कारण उसकी आज्ञा में बने रहना उसे कठिन नहीं लगता। ''और परमेश्वर का प्रेम यह है कि हम उसकी आज्ञाओं को मानें और उसकी आज्ञाएं कठिन नहीं हैं'' (1 यूहन्ना 5:3)।

हमारे लिए किए गए उसके बलिदान को अपने हर रोज़ का मनन बनाकर, जो कुछ मसीह ने हमारे लिए किया है, उसे मन में रखकर, उसे प्रतिदिन स्मरण रखें। उद्धार के लिए उसके दान पर सावधानीपूर्वक किया गया विचार दिन-ब-दिन उसके रूप में बदलते हुए, आपको उसी के अनुसार उसके राज्य में प्रेम की मज़दूरी के लिए खींचता रहेगा।

सारांश

परमेश्वर की परिकल्पना से, कलीसिया और क्रूस एक दूसरे से बन्धे हुए हैं। कलीसिया क्रूस के द्वारा बनती, शुद्ध होती, और विवश होती है।

जब यीशु क्रूस पर दुख सह रहा था तो आस-पास बेकाबू हुई भीड़ ठट्ठा उड़ाने वाले प्रश्नों की बौछार में दो प्रश्न कर रही थी ''वह अपने आप को ज़्यों नहीं बचाता?'' और ''परमेश्वर उसे ज़्यों नहीं बचाता?'' (देखिए मज़ी 27:39-43)। भीड़ को ज़रा भी अहसास नहीं था कि ऐसा कहकर वे परमेश्वर के उद्देश्य की नींव पर ही प्रहार कर रहे थे। यदि यीशु अपने आप को बचा लेता, या परमेश्वर उसे क्रूस की मृत्यु से छुड़ा लेता, तो कलीसिया का अस्तित्व असज़्भव हो जाना था; ज़्योंकि कलीसिया उन लोगों से बनी है, जिनके पिछले पाप क्रूस के द्वारा क्षमा किए गए हैं और वे प्रतिदिन क्रूस के द्वारा शुद्ध और पवित्र किए जाते हैं।

और तो और, क्रूस के बिना, कलीसिया ऐसे होती जैसे कि उसका जीवन प्रेरणा रहित हो। ज़्योंकि कलीसिया क्रूस के द्वारा परमेश्वर की होने के लिए और परमेश्वर के ढंग से ही परमेश्वर का काम करने के लिए विवश होती है।

यदि आप मसीह की कलीसिया से बाहर हैं, तो इसमें आने की जल्दी करें, कलीसिया में आने से, आपको क्रूस के सभी लाभ मिलते हैं। कलीसिया उन लोगों का समूह है जिन्हें मसीह के लहू के द्वारा छुटकारा मिला है और वे परमेश्वर की संतान के रूप में रहते हैं।

इस संसार का हर एक व्यज़्ति परमेश्वर के उदार दानों से घिरा हुआ है। वह हमें सांस लेने के लिए वायु, पीने के लिए पानी, रहने के लिए स्थान, आनन्द करने के लिए पारिवारिक सज़्बन्ध तथा अन्य असंज़्य आशिषें देता है। परमेश्वर के सभी उपकारों को एक-एक करके बताना किसी के वश की बात नहीं है। बेशक उसके अनुग्रह की सर्वोज़म अभिव्यज़्ति वह उद्धार है, जो वह हमें मसीह के द्वारा देता है। इसमें परमेश्वर को सबसे महंगा दाम चुकाना पड़ा, और जो पापी इसे पा लेते हैं, उन्हें सब से अधिक लाभांश मिलता है।

कई लोगों को परमेश्वर के अनुग्रह से बहुत सी भौतिक आशिषें तो मिली हैं लेकिन उन्हें उद्धार नहीं मिला। ज़्या आप भी उन्हीं लोगों में से हैं? मसीह में विश्वास करके (रोमियों 10:10), पाप से मन फिराकर (प्रेरितों के काम 11:18), मसीह को परमेश्वर का पुत्र स्वीकार करके (रोमियों 10:10), और मसीह में बपतिस्मा लेकर (गलतियों 3:27), आप मसीह की देह में (1 कुरिन्थियों 12:13), जो कि अनुग्रह का स्थान है प्रवेश करके उसके दिए अनन्त जीवन को पा सकते हैं। पौलुस कहता है, ''ज़्या तुम नहीं जानते कि हम जितनों ने मसीह यीशु का (में) बपतिस्मा लिया, तो उसकी मृत्यु का (में) बपतिस्मा लिया?'' (रोमियों 6:3); ''हम को उस में उसके लहू के द्वारा छुटकारा, अर्थात अपराधों (या पापों) की क्षमा, उसके उस अनुग्रह के धन के अनुसार मिला है जिसे उसने सारे ज्ञान और समझ सहित हम पर बहुतायत (दयालुता से दिया) से किया'' (इफिसियों 1:7, 8क)।

यीशु अपने क्रूस के द्वारा, क्षमा तथा जीवन के लिए जो उसकी देह, अर्थात कलीसिया से बनता है, आपको निमन्त्रित करता है। ज़्या आप उसका निमन्त्रण स्वीकार करेंगे?

पाद टिप्पणियां

[1]हैनरी सी. थियसन, *लैज़्चर्स इन सिस्टेमैटिक थियोलॉजी* (ग्रैंड रैपिड्ज़, मिशि.: Wm. B. ईर्डमैन्स पज़्लिशिंग कं., 1949), 313। [2]आर.ए.टोरे, *व्हट द बाइबल टीचस* (न्यूयॉर्क: ज़्लेमिंग एच. रेवल कं., 1898), 144.